

# श्रीमद्-भगवद्-गीता Śrīmad-Bha-ga-vad-Gīta

## Chapter 2 Verses 19 - 36

ॐ हरिः ॐ

om hariḥ om

श्री गुरुभ्यो नमः

śrī gu-ru-bhyo na-maḥ

हरिः ॐ

hariḥ om

ॐ श्री कृष्णपरमात्मने नमः

om śrī kṛṣṇa-pa-ra-māt-ma-ne na-maḥ

श्रीमद्-भगवद्-गीता

śrīmad-bha-ga-vad-gī-tā

अथ द्वितीयोऽध्यायः ।

a-tha dvi-tī-yo-'dhyā-yaḥ ।

साङ्ख्ययोगः ।

sāṅ-khya-yo-gaḥ ।

|                                |   |
|--------------------------------|---|
| य एनं वेत्ति हन्तारं           | ya enam vet-ti han-tā-ram                 |
| यश्चैनं मन्यते हतम् ।          | yaś-cai-nam manya-te ha-tam ।             |
| उभौ तौ न विजानीतः              | u-bhau tau na vi-jā-nī-taḥ                |
| नायं हन्ति न हन्यते ॥ १९ ॥     | nā-yam han-ti na han-ya-te ॥ 19 ॥         |
| न जायते म्रियते वा कदाचित्     | na jā-ya-te mri-ya-te vā ka-dā-cit        |
| नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।  | nā-yam bhūt-vā bha-vi-tā vā na bhū-yaḥ ।  |
| अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणः   | ajo nit-yaḥ śāś-va-to'-yam pu-rā-ṇaḥ      |
| न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ २० ॥ | na han-ya-te han-ya-mā-ne śa-rī-re ॥ 20 ॥ |
| वेदाविनाशिनं नित्यं            | ve-dā-vi-nā-śi-nam nit-yam                |
| य एनमजमव्ययम् ।                | ya enam-ajam-av-ya-yam ।                  |
| कथं स पुरुषः पार्थ             | ka-tham sa pu-ru-ṣaḥ pār-tha              |
| कं घातयति हन्ति कम् ॥ २१ ॥     | kaṁ ghā-ta-ya-ti han-ti kam ॥ 21 ॥        |

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय      vā-sām-si jīr-ṇā-ni ya-thā vi-hā-ya  
 नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।      na-vā-ni grh-ṇā-ti na-ro'-pa-rā-ṇi ।  
 तथा शरीराणि विहाय जीर्णानि      ta-thā śa-rī-rā-ṇi vi-hā-ya jīr-ṇā-ni  
 अन्यानि संयाति नवानि देही ॥२२॥ an-yā-ni saṁ-yā-ti na-vā-ni de-hī ॥ 22 ॥

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि      nai-naṁ chin-dan-ti śas-trā-ṇi  
 नैनं दहति पावकः ।      nai-naṁ da-ha-ti pā-va-kaḥ ।  
 न चैनं क्लेदयन्त्यापः      na cai-naṁ kle-da-yant-yā-paḥ  
 न शोषयति मारुतः ॥ २३ ॥      na śo-ṣa-ya-ti mā-ru-taḥ ॥ 23 ॥

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयम्      ac-ched-yo'-ya-ma-dāh-yo'-yam  
 अक्लेद्योऽशोष्य एव च ।      akled-yo'-śoṣ-ya eva ca ।  
 नित्यः सर्वगतः स्थाणुः      nit-yaḥ sar-va-ga-taḥ sthā-ṇuḥ  
 अचलोऽयं सनातनः ॥ २४ ॥      aca-lo'-yaṁ sa-nā-ta-naḥ ॥ 24 ॥

|                            |                                   |
|----------------------------|-----------------------------------|
| अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयम्    | av-yak-to'-yam-acint-yo'-yam      |
| अविकार्योऽयमुच्यते ।       | avi-kār-yo'-yam-uc-ya-te ।        |
| तस्मादेवं विदित्वैनं       | tasmād-evam vi-dit-vai-nam        |
| नानुशोचितुमर्हसि ॥ २५ ॥    | nā-nu-śo-ci-tum-ar-ha-si ॥ 25 ॥   |
| अथ चैनं नित्यजातं          | a-tha cai-naṃ nit-ya-jā-taṃ       |
| नित्यं वा मन्यसे मृतम् ।   | nit-yaṃ vā manya-se mṛ-tam ।      |
| तथापि त्वं महाबाहो         | ta-thā-pi tvaṃ ma-hā-bā-ho        |
| नैवं शोचितुमर्हसि ॥ २६ ॥   | nai-vaṃ śo-ci-tum-ar-ha-si ॥ 26 ॥ |
| जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः   | jā-tas-ya hi dhru-vo mṛt-yuḥ      |
| ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।     | dhru-vaṃ jan-ma mṛt-asya ca ।     |
| तस्मादपरिहार्येऽर्थे       | tas-mā-da-pa-ri-hār-ye'r-the      |
| न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ २७ ॥ | na tvaṃ śo-ci-tum-ar-ha-si ॥ 27 ॥ |

|   |   |
|---|---|
| अव्यक्तादीनि भूतानि                     | av-yak-tā-dī-ni bhū-tā-ni                     |
| व्यक्तमध्यानि भारत ।                    | vyak-ta-madh-yā-ni bhā-ra-ta ।                |
| अव्यक्तनिधनान्येव                       | av-yak-ta-ni-dha-nān-ye-va                    |
| तत्र का परिदेवना ॥ २८ ॥                 | tat-ra kā pari-de-va-nā ॥ 28 ॥                |
| आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनम्             | āś-carya-vat-paś-ya-ti kaś-ci-de-nam          |
| आश्चर्यवद्ब्रूति तथैव चान्यः ।          | āś-carya-vad-va-da-ti ta-thai-va cān-yaḥ ।    |
| आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति               | āś-carya-vac-cai-nam-an-yaḥ śṛ-ṇo-ti          |
| श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् ॥ २९ ॥ | śrut-vāp-ye-naṃ veda na ca-iva kaś-cit ॥ 29 ॥ |
| देही नित्यमवध्योऽयं                     | de-hī nit-yam-avadh-yo'yaṃ                    |
| देहे सर्वस्य भारत ।                     | de-he sar-vas-ya bhā-ra-ta ।                  |
| तस्मात्सर्वाणि भूतानि                   | tas-māt-sar-vā-ṇi bhū-tā-ni                   |
| न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ ३० ॥              | na tvam śo-ci-tum-ar-ha-si ॥ 30 ॥             |

|                                  |                                      |
|----------------------------------|--------------------------------------|
| स्वधर्ममपि चावेक्ष्य             | sva-dhar-ma-ma-pi cā-vekṣ-ya         |
| न विकम्पितुमर्हसि ।              | na vi-kam-pi-tum-ar-ha-si ।          |
| धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत् | dharm-yād-dhi yud-dhāc-chre-yo'n-yat |
| क्षत्रियस्य न विद्यते ॥ ३१ ॥     | kṣat-ri-yas-ya na vid-ya-te ॥ 31 ॥   |
| यदृच्छया चोपपन्नं                | ya-dṛc-cha-yā co-pa-pan-naṃ          |
| स्वर्गद्वारमपावृतम् ।            | svar-ga-dvā-ram-apā-vṛ-tam ।         |
| सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ          | su-khi-naḥ kṣat-ri-yāḥ pār-tha       |
| लभन्ते युद्धमीदृशम् ॥ ३२ ॥       | la-bhan-te yud-dham-ī-dṛ-śam ॥ 32 ॥  |
| अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं           | a-tha cet-tvam-imam dharm-yaṃ        |
| सङ्ग्रामं न करिष्यसि ।           | saṅ-grā-maṃ na ka-riṣ-ya-si ।        |
| ततः स्वधर्मं कीर्तिं च           | ta-taḥ sva-dhar-maṃ kīr-tiṃ ca       |
| हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥ ३३ ॥      | hit-vā pā-pam-avāps-ya-si ॥ 33 ॥     |

|                              |                                     |
|------------------------------|-------------------------------------|
| अकीर्तिं चापि भूतानि         | a-kīr-tiṃ cā-pi bhū-tāni            |
| कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम् ।     | ka-tha-yiṣ-yan-ti te'v-ya-yām ।     |
| सम्भावितस्य चाकीर्तिः        | sam-bhā-vi-tas-ya cā-kīr-tiḥ        |
| मरणादतिरिच्यते ॥ ३४ ॥        | ma-ra-ṇād-ati-ric-ya-te ॥ 34 ॥      |
| भयाद्रणादुपरतं               | bha-yād-ra-ṇād-upa-ra-taṃ           |
| मंस्यन्ते त्वां महारथाः ।    | mans-yante tvāṃ ma-hā-ra-thāḥ ।     |
| येषां च त्वं बहुमतः          | ye-ṣāṃ ca tvāṃ ba-hu-ma-taḥ         |
| भूत्वा यास्यसि लाघवम् ॥ ३५ ॥ | bhūt-vā yās-ya-si lā-gḥa-vam ॥ 35 ॥ |
| अवाच्यवादांश्च बहून्         | avāc-ya-vā-dāṃś-ca ba-hūn           |
| वदिष्यन्ति तवाहिताः ।        | va-diṣ-yan-ti ta-vā-hi-tāḥ ।        |
| निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं       | nin-dan-tas-ta-va sā-marṭh-yaṃ      |
| ततो दुःखतरं नु किम् ॥ ३६ ॥   | ta-to duḥ-kha-ta-raṃ nu kim ॥ 36 ॥  |

ॐ तत्सत्

om tat-sat

इति श्रीमद्भगवद्गीतासु

iti śrīmad-bhaga-vad-gī-tā-su

उपनिषत्सु

upa-ni-ṣat-su

ब्रह्मविद्यायाम्

brahma-vid-yā-yām

योगशास्त्रे

yoga-śās-tre

श्रीकृष्णार्जुनसंवादे

śrī-kṛṣṇ-ṇār-juna-saṃ-vā-de

साङ्ख्य योगो नाम

sāṅ-khya yo-go nā-ma

द्वितीयोऽध्यायः ।

dvi-tī-yo-'dhyā-yaḥ ।

ॐ हरिः ॐ ।

om hariḥ om

श्री गुरुभ्यो नमः

śrī guru-bhyo namaḥ

हरिः ॐ ।

hariḥ om ।



सर्वधर्मान्परित्यज्य

sar-va-dhar-mān-pari-tyaj-ya

मामेकं शरणं ब्रज ।

mām-ekaṃ śara-ṇaṃ vra-ja ।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यः

ahaṃ tvā sar-va-pā-pebh-yaḥ

मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥ १८-६६ ॥ mokṣa-yiṣ-yā-mi mā śu-caḥ ॥ 18-66 ॥

श्री कृष्णार्पणमस्तु

śrī kṛṣ-ṇār-pa-ṇam-astu

